तेरहद्वीप रचना

—: लेखिका : —

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

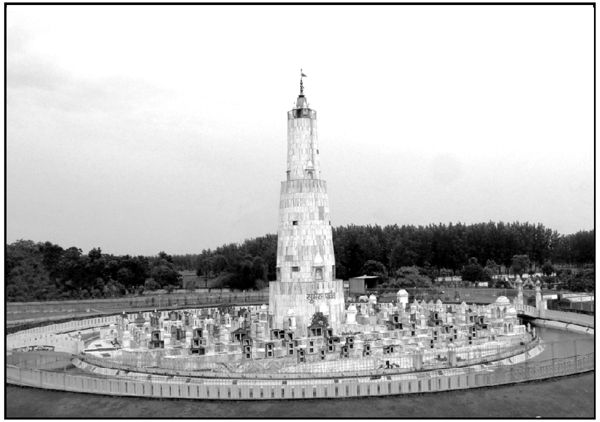

हस्तिनापुर में निर्मित विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 283

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 27 अप्रैल से 2 मई 2007 तक आयोजित तेरहद्वीप जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित

प्रथम संस्करण	**वैशाख शु. ग्यारस**	**मूल्य**
1100 प्रतियाँ	**वीर निर्वाण संवत् 2533**	**5.00 रु.**
	27 अप्रैल 2007	

कम्पोजिंग—ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

तेरहद्वीप रचना

जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी **परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी** आज कर्मठता एवं सफलता का पर्याय बन चुकी हैं, जिन-जिन कार्यों को पूज्य माताजी ने हाथ में लिया, उनसे जहाँ जैनधर्म की महत्वपूर्ण प्रभावना हुई, वहीं जैन संस्कृति के संरक्षण की दिशा में महान आधारभूत स्तंभ भी प्राप्त हुए। इसी श्रृंखला में एक प्राचीन अर्वाचीनता की कड़ी है- **तेरहद्वीप।**

सन् 1965 में एक दिन प्रातःकाल ध्यान करते हुए पूज्य माताजी को अकृत्रिम चैत्यालयों की एक अद्भुत रचना का प्रतिभास हुआ, पुनः शास्त्रों को उठाकर देखने पर मध्यलोक के तेरहद्वीप के रूप में उसी रचना का वर्णन पढ़कर उनके मन में अपार हर्ष हुआ था, तभी से इस तेरहद्वीप रचना को पृथ्वी पर साकार करने की भावना उनके हृदय में बलवती थी। सन् 1976 में उन्हीं चैत्यालयों के चिन्तनस्वरूप पूज्य माताजी ने ''इन्द्रध्वज विधान'' की रचना की, जो समस्त जैन समाज में अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इसी प्रकार सन् 1974 से लेकर 1985 तक तेरहद्वीप के प्रथम द्वीप 'जम्बूद्वीप' की भौगोलिक रचना का सुन्दर निर्माण खुले आसमान के नीचे भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि पौराणिक तीर्थ हस्तिनापुर की पावनधरा पर पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा सम्पन्न हुआ, जो आज राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय आकर्षण का केन्द्र बन चुका है।

सन् 1993 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के विशाल परिसर में तेरहद्वीप रचना बनाने हेतु 4000 वर्ग फीट के विशाल जिनालय का शिलान्यास किया गया परन्तु हजारों किमी. की पदयात्रा, अनेकानेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम, प्रयाग-कुण्डलपुर इत्यादि तीर्थों के नवनिर्माण, षड्खण्डागम ग्रंथ का टीका लेखन इत्यादि अनेकानेक कार्यों में व्यस्तता के कारण तेरहद्वीप रचना निर्माण का कार्य परिपूर्णता की ओर अग्रसर न हो सका।

पुनः सन् 2006 से तिलोयपण्णत्ति-त्रिलोकसार आदि ग्रंथों के आधार से पूज्य माताजी ने इस रचना की बारीकियों के विषय में दिशा-निर्देश प्रदान करना प्रारंभ किया और मात्र एक वर्ष के भीतर यह रचना तैयार होकर अपने प्रतिभास के 42 वर्ष बाद 27 अप्रैल से 2 मई 2007 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा से प्रतिष्ठित होकर जैन संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर सिद्ध होने जा रही है।

प्रस्तुत है पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के प्रवचनों के आधार पर तेरहद्वीप से सम्बंधित संक्षिप्त विवरण–

तेरहद्वीप है क्या-

अलोकाकाश के मध्य स्थित पुरुषाकार लोक तीन भागों में विभक्त है-अधोलोक, मध्यलोक एवं ऊर्ध्वलोक। इनमें से मध्यलोक के असंख्यात द्वीप समुद्रों में प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप है, उसको घेरकर लवण समुद्र है, इसमें जम्बूद्वीप 1 लाख योजन प्रमाण है तथा लवण समुद्र उससे दूना अर्थात् 2 लाख योजन प्रमाण है। लवण समुद्र को घेरकर चार लाख योजन विस्तृत धातकीखण्ड द्वीप है इसे घेरकर आठ लाख योजन विस्तार वाला कालोदधि समुद्र है। इसको घेरकर सोलह लाख योजन विस्तृत पुष्करवर द्वीप है और इसके बाद 32 लाख योजन वाला पुष्करवर समुद्र है। पुष्करद्वीप के ठीक बीच में चूड़ी के समान आकार वाला एक मानुषोत्तर पर्वत है। इस पर्वत तक ही मनुष्य लोक की सीमा है। इसके आगे भी इसी प्रकार क्रम से एक द्वीप और एक समुद्र करके असंख्यात द्वीप और असंख्यात समुद्र हैं जिनका विस्तार क्रम से दूना-दूना होता चला गया है।

सर्वप्रथम हमें इन तेरह द्वीपों के नाम जानना है। सबसे पहला द्वीप है-**जम्बूद्वीप**, दूसरा है **धातकीखण्ड द्वीप**, तीसरा-**पुष्करवरद्वीप**, चौथा-**वारुणीवर द्वीप** है, पाँचवा द्वीप है-**क्षीरवर द्वीप**, इस द्वीप को घेरे हुए क्षीरवर नाम से समुद्र है जिसका जल क्षीर अर्थात् दूध के समान है, प्रत्येक तीर्थंकर भगवान के जन्म के समय इसी समुद्र का जल लाकर इन्द्र एवं देवगण भगवान का जन्माभिषेक करते हैं। वहाँ मनुष्य नहीं जा सकते हैं, कोई भी कितने भी शक्तिशाली ऋद्धिसम्पन्न मनुष्य या विद्याधर क्यों न हों वहाँ नहीं पहुँच सकते हैं। छठा द्वीप है-**घृतवर द्वीप**, सातवाँ द्वीप है-**क्षौद्रवर द्वीप**, आठवाँ द्वीप है-**नंदीश्वर द्वीप**, इस आठवें द्वीप में अकृत्रिम चैत्यालय हैं जिनकी हम और आप आष्टान्हिक पर्व में पूजन, जाप्यादि करते हैं। नवमां द्वीप है**अरुणवर द्वीप**, दशवाँ है-**अरुणाभास द्वीप**, ग्यारहवाँ-**कुण्डलवर द्वीप**, बारहवाँ-**शंखवर द्वीप** तथा तेरहवाँ-**रुचकवर द्वीप** है। इन सभी द्वीपों के बाद जो-जो समुद्र हैं उसमें प्रथम लवण समुद्र एवं दूसरे कालोदधि समुद्र को छोड़कर शेष सभी द्वीप के ही नाम वाले हैं जैसे पुष्करवर समुद्र, वारुणीवर समुद्र आदि।

चूँकि पुष्करद्वीप में मानुषोत्तर पर्वत के निमित्त से दो भाग हो गये इसीलिए मानुषोत्तर पर्वत से पहले का भाग पुष्करार्ध द्वीप कहलाता है, यह आधा द्वीप माना जाता है। पुनः इस पुष्करार्ध द्वीप के उत्तर-दक्षिण में दो इष्वाकार पर्वत होने से पुष्करार्ध द्वीप के दो भेद हो गये-पूर्व पुष्करार्ध और पश्चिम पुष्करार्ध। यहाँ तक ही मनुष्यों का अस्तित्व है इसके आगे नहीं। द्वीपों में भी वैसे तो असंख्यात द्वीप समुद्र हैं परन्तु **जम्बूद्वीप से लेकर तेरहवें रुचकवर द्वीप तक ही अनादिनिधन अकृत्रिम जिनमंदिर हैं, उसके आगे नहीं हैं, इसीलिए मध्यलोक में तेरहद्वीप रचना को प्रधानता दी जाती है।**

इन तेरहद्वीपों की रचना में कुल 458 अकृत्रिम जिनमंदिर हैं, जिन्हें मध्यलोक के 458 अकृत्रिम जिनमंदिर कहा जाता है।

तेरहद्वीप के 458 अकृत्रिम जिनमंदिर-

तेरहद्वीपों में से प्रथम ढाईद्वीपों में 398 अकृत्रिम जिनमंदिर हैं, पुनः चौथे से तेरहवें द्वीप तक कुल मिलाकर 60 अकृत्रिम जिनमंदिर हैं, इस

प्रकार कुल मिलाकर 398+60=458 जिनमंदिर हुए। इन्द्रध्वज महामण्डल विधान में इन्हीं 458 अकृत्रिम जिनमंदिरों पर ध्वजा चढ़ाते हुए उनकी पूजा की जाती है। इन मंदिरों की गणना इस प्रकार है–

प्रथम जम्बूद्वीप के बीचों-बीच में स्थित सुदर्शन मेरु (सुमेरु पर्वत) के चार वनों में 4-4 मंदिर, ऐसे **16 मंदिर** हैं, पुनः मेरु की चारों विदिशाओं में स्थित गजदंत पर्वतों पर 1-1 ऐसे **4 मंदिर**, आगे मेरु के उत्तर-दक्षिण में उत्तरकुरु-देवकुरु में क्रमशः जम्बूवृक्ष-शाल्मलिवृक्ष पर 1-1 ऐसे **2 मंदिर**, पुनः सुमेरु के पूर्व-पश्चिम में 8-8 वक्षार ऐसे 16 वक्षार पर्वत के **16 मंदिर**, पुनः पूर्व-पश्चिम में ही 16-16 विदेह क्षेत्रों के मध्य में 32 विजयार्ध+भरत-ऐरावत के 2 विजयार्ध पर्वत ऐसे कुल 34 विजयार्धों पर **34 मंदिर** और मेरु के दक्षिण-उत्तर में छह कुलाचल पर्वतों पर **6 मंदिर**, इस प्रकार 16+4+2+16+34+6=**78 अकृत्रिम जिनमंदिर जम्बूद्वीप में हैं।**

इसी प्रकार पूर्व धातकीखण्डद्वीप में विजयमेरु के साथ 78 जिनमंदिर हैं, पश्चिम धातकीखण्डद्वीप में अचलमेरु के साथ 78 मंदिर एवं 2 इष्वाकार के ऐसे कुल **158 मंदिर** हैं।

पुनः पूर्व पुष्करार्ध द्वीप में मंदर मेरु सहित 78 मंदिर, पश्चिम पुष्करार्ध में विद्युन्माली मेरु सहित 78 एवं इष्वाकार के 2 कुल ऐसे**158 मंदिर** हैं। पुनः मानुषोत्तर पर्वत पर **4 मंदिर** हैं। इस प्रकार जम्बूद्वीप संबंधी 78, धातकीखण्ड संबंधी 158, पुष्करार्ध द्वीप संबंधी 158 एवं मानुषोत्तर पर्वत के 4 कुल मिलाकर 78+158+158+4=398 अकृत्रिम जिनमंदिर ढाई द्वीप के हुए।

पुनः चौथे, पाँचवे, छठे एवं सातवें द्वीप में कोई भी जिनमंदिर नहीं है। आठवें नंदीश्वर द्वीप में 52 जिनमंदिर हैं। पुनः नवमें तथा दशवें द्वीप में कोई भी जिनमंदिर नहीं है। पुनः ग्यारहवें कुण्डलवरद्वीप के मध्य में स्थित वलयाकार कुण्डलवर पर्वत पर 4 मंदिर हैं, बारहवें द्वीप में कोई जिनमंदिर नहीं है, पुनः तेरहवें रुचकवर द्वीप के मध्य में स्थित गोलाकार रुचकवर पर्वत पर 4 जिनमंदिर हैं।

इस प्रकार 398+52+4+4=458 कुल अकृत्रिम जिनमंदिर हुए।

जम्बूद्वीप स्थित नवनिर्मित तेरहद्वीप जिनालय में इन सभी अकृत्रिम जिनमंदिरों को अत्यंत सुंदर कलाकृतिपूर्ण स्वर्णिम वर्ण में स्थापित किया गया है। साथ ही तेरहद्वीपों में जो सैकड़ों देवभवन हैं और जिनमें देव-देवी रहते हैं, तथा उनके गृह चैत्यालयों में भगवान विराजमान रहते हैं, ऐसे लगभग 800 देवभवन भी इस रचना में बने हैं, जो धातु से निर्मित रंग-बिरंगे हैं। इन सभी अकृत्रिम जिनमंदिरों एवं चैत्यालयों में सिद्ध भगवन्तों की प्रतिमाएं विराजमान की गई हैं।

ढाई द्वीप क्या है?-

प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप है, उसको घेरकर लवण समुद्र है, पुनः लवण समुद्र को घेरकर धातकीखण्ड द्वीप है, इस धातकीखण्ड द्वीप में उत्तर एवं दक्षिण में एक-एक इष्वाकार पर्वत होने से धातकीखण्ड के पूर्व धातकीखण्ड एवं पश्चिम धातकीखण्ड ऐसे दो भाग हो गये हैं, पुनः धातकीखण्ड को घेरकर कालोदधि समुद्र है। इस कालोदधि समुद्र को घेरकर पुष्करवरद्वीप है, जिसकी परिधि के बीचों-बीच वलयाकार मानुषोत्तर पर्वत है, जिससे पुष्कवरद्वीप दो भागों में बं गया है। जैसा कि पूर्व में बताया गया है इस मानुषोत्तर पर्वत तक ही मनुष्यों की सीमा है, इसके आगे नहीं। इस प्रकार जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड द्वीप और पुष्करार्ध (आधा पुष्करवर) द्वीप मिलकर ढाई द्वीप बनता है।

ढाई द्वीप में हैं पंचमेरु-

इन ढाई द्वीपों में पाँच मेरु हैं। जम्बूद्वीप के मध्य में **सुदर्शन मेरु (सुमेरु)**, पूर्व धातकीखण्ड के मध्य में **विजयमेरु**, पश्चिम धातकीखण्ड के मध्य में **अचल मेरु**, पूर्व पुष्करार्ध द्वीप के बीचों-बीच में **मंदरमेरु** एवं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप के बीचों-बीच में **विद्युन्माली मेरु।**

ये पाँचों मेरु ढ़ाई द्वीप के अन्दर ही हैं बाहर नहीं। जम्बूद्वीप में षट् कुलाचल पर्वत हैं हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी, इन षट् कुलाचलों पर श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये छः देवियाँ निवास करती हैं। इन जम्बूद्वीप के सरोवरों पर रहने वाली ये छहों देवियाँ सम्यग्दृष्टि होती हैं और भगवान के गर्भावतरण कल्याणक में तीर्थंकर

माता की सेवा करने के लिए आती हैं। एक बात यहाँ विशेष ध्यान रखनी है कि जम्बूद्वीप में जन्में तीर्थंकरों का जन्माभिषेक सुमेरु पर्वत की पांडुक आदि शिलाओं पर होता है और यहीं के षट्कुलाचल की देवियाँ माता की सेवा करती हैं। धातकीखण्ड के दो भाग-पूर्व धातकीखण्ड और पश्चिम धातकीखण्ड हैं। इसमें पूर्व धातकीखण्ड में विजयमेरु है जिसके ऊपर वहाँ जन्में तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है। इस पूर्व धातकीखण्ड द्वीप में भी जम्बूद्वीप जैसी ही व्यवस्था है, षट्कुलाचल आदि हैं, वहाँ की श्री, ह्री आदि देवियाँ वहाँ के भरत क्षेत्र आदि में जन्मे तीर्थंकरों की माता की सेवा के लिए जाती हैं। अचल मेरु पश्चिम धातकीखण्ड में है, वहाँ के भरतक्षेत्र आदि में जन्म लेने वाले तीर्थंकरों का जन्माभिषेक अचलमेरु की पाण्डुक आदि शिलाओं पर होता है और वहाँ की देवियाँ माता की सेवा हेतु जाती हैं, ठीक इसी प्रकार पूर्व पुष्करार्ध में मंदरमेरु और पश्चिम पुष्करार्ध में विद्युन्माली मेरु हैं वहाँ-वहाँ के भरतक्षेत्र आदि में जन्में तीर्थंकरों का अभिषेक वहाँ-वहाँ के मेरु पर्वतों की पाण्डुक आदि शिलाओं पर होता है।

इन षट्कुलाचलों पर जो श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी देवियाँ कमलों में निवास करती हैं, वे कमल पृथ्वीकायिक हैं, अकृत्रिम हैं। प्रत्येक देवियों के कमल में महल और महल में जिनमंदिर हैं। श्री देवी के परिवार कमल की संख्या 1 लाख 40 हजार 115 हैं। इन सबमें जिनमंदिर हैं और उन जिनमंदिरों में जिनप्रतिमाएं हैं।

ढाई द्वीप की 170 कर्मभूमियाँ-

जैसा कि वर्णन किया गया है जम्बूद्वीप के ठीक बीचों-बीच में सुदर्शन मेरु (सुमेरु) स्थित है तथा दक्षिण से उत्तर की ओर छः कुलाचल और उनके निमित्त से 7 क्षेत्र हैं। छह कुलाचल क्रम से इस प्रकार हैं-हिमवन, महाहिमवन, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी, इन कुलाचलों द्वारा विभक्त होकर जो सात क्षेत्र बने हैं, वे हैं-भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत एवं ऐरावत। इनमें से भरत क्षेत्र मध्य में स्थित विजयार्ध पर्वत एवं गंगा-सिंधु नदियों के कारण छह खण्डों में विभक्त हो गया है, जिनमें से पाँच म्लेच्छ खण्ड एवं मध्य का एक आर्यखण्ड है। इसी प्रकार ऐरावत क्षेत्र में भी पाँच

म्लेच्छ खण्ड एवं मध्य का एक आर्यखण्ड है।

इन भरत एवं ऐरावत क्षेत्रों में कर्मभूमि की व्यवस्था रहती है अर्थात् असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प रूप षट्क्रियाओं के आधार पर मानवीय संस्कृति का संचालन होता है तथा यहाँ से मनुष्य तपश्चरणादि के द्वारा कर्मों का नाश करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

हैमवत-हैरण्यवत क्षेत्रों में जघन्य भोगभूमि, हरि-रम्यक क्षेत्रों में मध्यम भोगभूमि एवं देवकुरु-उत्तरकुरु में उत्तम ऐसी छह भोगभूमियाँ जम्बूद्वीप में है। भोगभूमि में कल्पवृक्षों से प्राप्त सामग्री द्वारा मानवीय संस्कृति का संचालन होता है तथा संयम के अभाव में यहाँ से मोक्ष प्राप्ति संभव नहीं है।

जम्बूद्वीप के बीच में सुमेरु पर्वत है, जिसके दक्षिण में निषध एवं उत्तर में नील पर्वत है, यह मेरु विदेह के ठीक बीच में है। निषध पर्वत से सीतोदा और नील पर्वत से सीता नदी निकलकर सीता नदी पूर्व समुद्र में एवं सीतोदा नदी पश्चिम समुद्र में प्रवेश करती हैं। इसलिए इनसे विदेह के 4 भाग हो गये हैं। दो भाग मेरु के पूर्व की ओर और दो भाग मेरु के पश्चिम की ओर। एक-एक विदेह में 4-4 वक्षार पर्वत और 3-3 विभंगा नदियाँ होने से एक-एक विदेह के 8-8 भाग हो गये हैं। इस प्रकार इन चार विदेहों के 4×8=32 भाग अर्थात् 32 विदेह क्षेत्र बन गये हैं, इन 32 विदेहों में भरत-ऐरावत क्षेत्र के समान 6-6 खण्ड हैं, जिनमे से मध्य के आर्यखण्डों में भी कर्मभूमि की व्यवस्था रहती है। इस प्रकार एक जम्बूद्वीप में भरत-ऐरावत संबंधी 1-1 एवं 32 विदेह संबंधी 32 कुल 1+1+32=34 कर्मभूमि हैं।

इसी प्रकार पूर्व धातकीखण्ड, पश्चिम धातकीखण्ड, पूर्व पुष्करार्ध द्वीप एवं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप में भी जम्बूद्वीप के समान ही व्यवस्था होने से 34-34 कर्मभूमियाँ हुईं। अतः ढाई द्वीप में कुल मिलाकर 34+34+34+34+34 या 34×5=170 कर्मभूमि हुईं। ढाई द्वीप के आगे कोई भी कर्मभूमि नहीं है क्योंकि आगे असंख्यात द्वीप समुद्रों में जघन्य भोगभूमि की व्यवस्था रहती है, मात्र अंतिम स्वयंभूरमण द्वीप के अंतिम आधे भाग तथा स्वयंभूरमण समुद्र में कर्मभूमि की व्यवस्था है, जहाँ मात्र पंचेन्द्रिय तिर्यंच एवं विकलत्रय जीव रहते हैं, मनुष्य नहीं।

ढाई द्वीप की 170 कर्मभूमियों में से प्रत्येक में तीर्थंकरों के जन्म होते हैं, अतः यदि मध्यलोक में एक साथ इन सभी कर्मभूमियों में तीर्थंकर जन्म लेवें तो अधिक से अधिक 170 तीर्थंकर एक समय में हो सकते हैं। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि जब सभी भरत और ऐरावत क्षेत्रों में चतुर्थकाल का वर्तन होगा, तभी 170 तीर्थंकरों का होना संभव है अन्यथा नहीं।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में निर्मित तेरहद्वीप रचना में आपको इन 170 तीर्थंकरों के समवसरण के दर्शन भी एक साथ प्राप्त हो सकेंगे। इन समवसरणों के साथ ही कर्मभूमियों में यथास्थान मंदिर, मुनियों के दर्शन, श्रावकों की षट्क्रियाएँ, मुनियों को आहारदान, नंदीश्वर द्वीप में इन्द्रों का आगमन एवं उनके द्वारा की गई पूजा आदि के दृश्य भी आपको देखने को मिलेंगे।

तेरहद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में ढाई द्वीप के पाँच भरतक्षेत्रों में जन्में पाँच तीर्थंकर भगवन्तों को विधिनायक बनाकर पाँच मेरुओं की पाण्डुकशिलाओं पर उनका जन्माभिषेक किया जायेगा। वे पाँच तीर्थंकर इस प्रकार हैं-

द्वीप/क्षेत्र	**तीर्थंकर**	**पिता एवं माता**	**नगरी**
जम्बूद्वीप-भरतक्षेत्र	श्री शांतिनाथ जी	विश्वसेन-ऐरादेवी	हस्तिनापुरी नगरी
पूर्व धातकीखण्ड-द्वीप-भरतक्षेत्र	श्री मुनिचंद्रनाथ जी	महासेन-सुनंदा	प्रभंकरा नगरी
पश्चिम धातकी खण्डद्वीप-भरतक्षेत्र	श्री बाहुनाथ जी	अजितसेन-वीरसेना	वीतशोका नगरी
पूर्व पुष्करार्ध द्वीप-भरतक्षेत्र	श्री विमलेन्द्रनाथ जी	विजय-विजया	वैजयंती नगरी
पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप-भरतक्षेत्र	श्री सुसंयतनाथ जी	सुभानु-सुप्रभा	क्षेमपुरी नगरी

इन सबका वर्णन सुनने मात्र से महान पुण्य का संचय होता है और वही पुण्य वास्तविक अकृत्रिम जिनमंदिरों के दर्शन में काम आयेगा, इसीलिए इसे रुचिपूर्वक सुनकर, पढ़कर और हस्तिनापुर में पधारकर इस रचना के दर्शन करके अपनी आत्मा को समुन्नत बनावें, यही मंगलकामना है।